SANT GADGE BABA AMRAVATI UNIVERSITY, AMRAVATI

UNIVERSITY LIBRARY

Hindi Ph.D.Thesis

Sr.No.	Title	Researcher	Supervisor	Year of Submission
1	प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहाणीयो मे प्रेम तत्व के स्वरुप का अनुशिलन (सन १९७५ तक)	अशोक गुजराती	डॉ.बी.एस.गौतम	1985
2	हिन्दी राम - काव्य में भगवान राम का चरित्र	शं.मो.बुंदेले	डॉ.सं.पु.राठी	1989
3	मानवीय संवेदनाओ के परिप्रेक्ष मे प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी की वस्तुरचना और जीवन दर्शन (१९३० से १९७५)	शालिनी रा.वर्मा	डॉ.बी.एस.गौतम	1991
4	ऋषी दयानंद की हिन्दी भाषा और साहित्य को देण	मं.मदनसुरे	डॉ.कु.लाल	1991
5	समसामायीक हिन्दी उपन्यास साहित्य के परिप्रेक्ष मे डॉ.ब्रजनारायण सिंह के उपन्यासोका अनुशिलन	व.सु.पण्ड्या	डॉ.भ.गौतम	1991
6	सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्यमे सामाजीक एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वरुप	सा.भरतीया	डॉ.पु.राठी	1993
7	प्रसादोत्तर हिन्दी नाटको मे रंग -- शिल्प	निर्मला जोशी	डॉ.बी.एस.गौतम	1994
8	प्रेम सौंदर्य एवं नारी भावना के संदर्भ मे जयशंकर प्रसाद के संपुर्ण कथा साहित्य का अनुशिलन	कु.सु.नंदी	डॉ.बी.एस.गौतम	1995
9	हिन्दी निर्गुण संत काव्य मे जीवन दर्शन एवं मानवीय संवेदना	कु.र.तिवारी	डॉ.बी.एस.गौतम	1995
10	कबीर की सामाजीक एवं दार्शनीक विचारधारा के संदर्भ मे छत्तीशगड के कबीर पंथी साहित्य का अनुशिलन	सरीता पांण्डेय	डॉ.बी.एस.गौतम	1997
11	नयी कहाणी के संदर्भ मे कमलेश्वर की सहाणींयो मे जनसामान्य की संवेदना का स्वरुप	एन.पी.सिंह परिहार	डॉ.बी.एस.गौतम	1998
12	सामाजिक और आर्थिक मुल्योंके परिप्रेक्ष मे भिष्म साहनी के कथा -- साहित्य और उपन्यासो का मुल्यांकन	प्र.कु.शुक्ल,	डॉ.सुभाष पटनायक	1998
13	जैनेंद्र के उपन्यास साहित्य मे स्त्री पुरुष संबंध	विजया पडोडे	डॉ.विकल गौतम	2001
14	आधुनिक हिन्दी काव्य धारा मे राष्ट्रीय सांस्कृतीक काव्य चेतना के परिप्रेक्ष मे माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशिलन	निलम सिंह	डॉ.सुभाष पटनायक	2001
15	आठवे दशक के प्रयोगशील प्रतिनिधी असूदित हिन्दी नाटक : भाषागत एवं रंगमचीय प्रयोग	आ.अ.सिद्दीकी	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2001
16	फणीश्वरनाथ रेणू के कथा साहित्य मे लोकजीवन की अभिव्यक्ती	र. मुंदडा	डॉ.बी.एस.गौतम	2002

17	माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतीत्व का अनुशिलन	ब.ल.गाजले	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2002
18	गुरुदत्त के उपन्यास साहित्य का परिशिलन	ज्योती व्यास	डॉ.प्र.जैन	2002
19	डॉ. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल तरुण के काव्य मे सामाजिक -- सांस्कृतीक चेतना का अनुशिलन	शा.ब.वाटाणे	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2002
20	निराला प्रनित काव्य मे मानवीय एवं सामाजिक जीवन चिंतन	प्रमिला साबू	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2002
21	सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ मे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य का अनुशिलन	शा.आ.पाण्डे	डॉ.श.मो.बुंदेले	2002
22	डॉ. धर्मवीर भारती के व्यक्तीत्व एवं कृतित्व का अनुशिलन	सु.केसवाणी	डॉ.बी.एस.गौतम	2002
23	कोरकू लोककथाएँ एवं लोकनाट्य का साहित्यक अनुशिलन, (मेलघाट -- कोरकू जनजाती के विशेष संदर्भ मे)	म.अ.पवार	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2002
24	मुन्शी प्रेमचंद के कथा साहित्य मे आदर्शवाद और यथार्थवाद का स्वरुप विश्लेषण	अर्जून सिंह	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2004
25	रामवृक्ष से निपुरी : व्यक्ती एवं कृतीत्व -- एक अध्ययन	रेखा गुप्ता	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2004
26	सन्त कबीर और सन्त तुकाराम के सामाजिक दर्शनका तुलनात्मक अनुशिलन	त्रिवेणी सोनोने	डॉ.बी.एस.गौतम	2005
27	विदर्भ की उर्दू माध्यमिक पाठशालाओंमे अध्ययन करणेवाली छात्रांओंकी शैक्षणिक समस्याओंका समिक्षण	शाहीन सुलताना	डॉ.युसुफ खान	2005
28	मैथीली शरण गुप्त के काव्य मे नारी भावना	अ.अ.पाखरे	डॉ.र.अ.शुक्ला	2005
29	नरेश मेहता के खंड काव्यों मे युगचेतना का स्वरुप	व.प्र.शाह	डॉ.शोभा वि.भागडे	2006
30	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग काव्य मे अभिव्यक्त सामाजिक एवं राजनैतीक जीवन दर्शन	ग.ल.ठाकुर	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2006
31	प्रगतीवादी चेतना के संदर्भ मे गजानन माधव मुक्तीबोध के काव्य का अनुशिलन	ज.अ.बडगे	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2007
32	राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ मे राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के हिन्दी काव्य का परिशिलन	सं.एस. धोटे	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2007
33	डॉ. रामेश्वरलाल खंडेलवाल तरुण के काव्य मे अभिव्यक्त अधुनिकता -- बोध	भा.च.दधिची	डॉ.शं.मो.बुंदेले	2007
34	यशपाल के उपन्यास :दृष्टी और दिशा.	स. चं. श्रावगी	डॉ. रमा. अ. शुक्ल.	2007
35	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास के संदर्भ में कमलेश्वर के उपन्यासों का अनुशीलन.	विधा.गो. उपाध्याय	डॉ . ज्योती व्यास	2007
36	नागार्जुन के काव्य में मानवीय संवेदनाएँ.	लता पु. डोंगरे	डॉ. ज्योती व्यास	2008
37	राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त वं मॉरिशस के राष्ट्रकवि डॉ. ब्रजेंद्र भगत मधुकर के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन.	ज्योती ना. मंत्री	डॉ. शं.मो. ुंदेले	2008
38	अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔंम के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय और सामाजीक चेतना का अनुशिलन.	मंजु पु. तरडेजा	डॉ. शं.मो. ुंदेले	2008